NEERAJ®

New Syllabus

Reference Book Based on the Syllabus of

N.I.O.S.–D.El.Ed.

Bridge Course

PDPET

N-524

fo|ky;h fo"k;ksa dk f'k{k.k&'kkL=

(Pedagogy of School Subjects)

By : *Prieti Gupta*

Published by:

NP

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Sales Office:
1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Price: ₹ 120.00

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Admn. Office : **Delhi-110007**
Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website*: **www.neerajbooks.com**

	Typesetting by: ***Competent Computers***	*Printed at*: ***Novelty Printer***

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc., given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc., see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
9. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajbooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajbooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110 006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

विषय–सूची

विद्यालयी विषयों का शिक्षण–शास्त्र

(Pedagogy of School Subjects)

Sample QUESTION PAPER - 1 (Solved)	1–2
Sample QUESTION PAPER - 2 (Solved)	1–2

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ

खण्ड–I: भाषाओं का शिक्षण–शास्त्र
(PEDAGOGY OF LANGUAGES)

1.	भाषा एवं संप्रेषण, शैशवावस्था एवं बचपन के दौरान उनका विकास और भाषा कौशल (Language and Communication, Language Skills and their Development during Infancy and Childhood)	1
2.	भाषा के शिक्षण–अधिगम में उपागम, विधियां एवं तकनीकें (Approaches, Methods and Techniques in Language Teaching-Learning)	8
3.	भाषा के शिक्षण–अधिगम के अनुपूरक संसाधन (Resources Supplementing Teaching Learning Language)	14
4.	भाषा अधिगम का आकलन (Assessment of Language Learning)	21

खण्ड–II: पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण शास्त्र
(PEDAGOGY OF ENVIRONMENTAL STUDIES)

5.	अधिगम के प्रारंभिक स्तरों पर पर्यावरण का महत्त्व, प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य एवं क्षेत्र (Importance of Environment at the Early Stages of Learning: Objectives and Scope of Teaching-Learning EVS at the Primary Stage)	27
6.	पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण–अधिगम (Teaching-Learning in EVS)	32
7.	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण शास्त्र (Resources Supplementing Learning EVS)	37
8.	पर्यावरण अध्ययन में अधिगम का आकलन करने हेतु उपकरण एवं तकनीकें (Tools and Techniques for Assessing Learning in EVS)	42

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
	खण्ड–III: गणित का शिक्षण शास्त्र (ASPECTS OF TEACHING MATHEMATICS)	
9.	गणित शिक्षण के विविध पहलू (Aspects of Teaching Mathematics)	48
10.	गणित की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (Teaching-Learning Process of Mathematics)	53
11.	शिक्षण अधिगम सामग्री तथा गणित अधिगम में अन्य संसाधन (Teaching Learning Material and Other Resources in Mathematics Teaching)	57
12.	गणित अधिगम में आकलन (Assessment in Mathematics Learning)	62
	खण्ड–IV: विज्ञान का शिक्षण शास्त्र (PEDAGOGY OF SCIENCE)	
13.	विज्ञान की प्रकृति (Nature of Science)	69
14.	विज्ञान शिक्षण के विभिन्न उपागम एवं विधियाँ (Different Approaches and Methods of Teaching Science)	75
15.	कम लागत या बिना लागत वाली शिक्षण–अधिगम सामग्री का उपयोग (Lesson Planning and Low Cost/No Cost Teaching Resources)	80
16.	विज्ञान के अधिगम का आकलन (Assessment in Science Learning)	84
	खण्ड–V: सामाजिक अध्ययन/विज्ञान का शिक्षण–शास्त्र (PEDAGOGY OF SOCIAL STUDIES)	
17.	प्रारंभिक विद्यालयी पाठ्यचर्या में सामाजिक अध्ययन की प्रकृति (Nature of Social Studies in Elementary School Curriculum)	90
18.	सामाजिक अध्ययन शिक्षण के अनुपूरक संसाधन (Resources Supplementing Teaching Social Studies)	95
19.	सामाजिक अध्ययन की शिक्षण अधिगम रणनीतियां (Teaching Learning Strategies in Social Studies)	102
20.	सामाजिक अध्ययन का आकलन (Assessment in Social Studies)	107

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

Based on: National Institute of Open Schooling-D.El.Ed. (BRIDGE COURSE)

विद्यालयी विषयों का शिक्षण-शास्त्र
(Pedagogy of School Subjects)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 70*

सामान्य निर्देश: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न 1. भाषा कौशल में सबसे पहले किस कौशल का विकास करना चाहिए?
(क) वाचन (ख) लेखन
(ग) श्रवण (घ) उच्चारण
उत्तर–(ग) श्रवण।

प्रश्न 2. सामाजिक विज्ञान की कक्षा में उपयोग होने वाली विधि जिसमें शिक्षार्थियों को एक-दूसरे के प्रति लगाव का मूल्यांकन करने के लिए कहते हैं,.....कहा जाता है।
(क) मनोमितीय तकनीक
(ख) स्व-आकलन
(ग) समाजमितीय तकनीक
(घ) केस अध्ययन
उत्तर–(ग) समाजमितीय तकनीक।

प्रश्न 3. छोटी कक्षाओं में गणित की नीरसता दूर करने के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि है–
(क) संश्लेषण (ख) आगमन
(ग) अन्वेषण (घ) खेल व मनोरंजन
उत्तर–(घ) खेल व मनोरंजन।

प्रश्न 4. मूल्यांकन होता है–
(क) मापन (ख) मूल्य निर्धारण
(ग) ग्रेडिंग (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर–(ख) मूल्य निर्धारण।

प्रश्न 5. सर्जनात्मकता से अभिप्राय है–
(क) पहचान, स्मरण, निर्धारण आदि मानसिक क्रियाएं।
(ख) अपरिचित व कुछ नवीन विकसित करने की क्षमता।
(ग) अर्जित ज्ञान को विभिन्न स्थितियों में प्रयोग करना।
(घ) चिन्तन प्रक्रिया।
उत्तर–(ख) अपरिचित व कुछ नवीन विकसित करने की क्षमता।

प्रश्न 6. विज्ञान पाठ्यक्रम का मुख्य आधार होना चाहिए–
(क) पठन कौशल (ख) सृजनात्मकता
(ग) लेखन कौशल (घ) सामुदायिकता
उत्तर–(ख) सृजनात्मकता।

प्रश्न 7. निम्न में से कौन-सा मानचित्र का प्रकार नहीं है?
(क) सारणी मानचित्र (ख) प्राकृतिक मानचित्र
(ग) राजनीतिक मानचित्र (घ) आर्थिक मानचित्र
उत्तर–(क) सारणी मानचित्र।

प्रश्न 8. 'ज्ञात से अज्ञात' की ओर किस विधि में अग्रसर रहता है?
(क) आगमन (ख) निगमन
(ग) विश्लेषण (घ) संश्लेषण
(ङ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर–(क) आगमन विधि।

प्रश्न 9. मापन का सर्वाधिक विश्वसनीय स्केल है–
(क) अनुपात (ख) क्रमिक
(ग) अन्तराल (घ) शाब्दिक
उत्तर–(क) अनुपात

प्रश्न 10. विभिन्न देशों में भूमि उपयोग को दर्शाने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी शिक्षण-सामग्री उपयुक्त होगी?
(क) वेन आरेख
(ख) फ्लो चार्ट
(ग) तुलनात्मक चार्ट
(घ) समय-रेखा चार्ट
उत्तर–(ग) तुलनात्मक चार्ट।

प्रश्न 11. उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण का सर्वाधिक महत्व है–
(क) व्यावहारिक (ख) आध्यात्मिक
(ग) मानसिक (घ) सांस्कृतिक
उत्तर–(क) व्यावहारिक।

प्रश्न 12. समन्वित शिक्षा की व्यवस्था कैसे बच्चों के लिए की जाती है?
(क) सामान्य (ख) विशिष्ट
(ग) प्रतिभाशाली (घ) उपर्युक्त सभी
उत्तर–(घ) उपर्युक्त सभी के लिए।

प्रश्न 13. पर्यावरण अध्ययन में कौन-से विषय सम्मिलित हैं?
(क) विज्ञान (ख) भूगोल
(ग) सामाजिक ज्ञान (घ) उपर्युक्त सभी
उत्तर–(घ) उपर्युक्त सभी

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 14. शैक्षणिक उद्देश्यों में एकरूपता लाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षानीति को कब लागू किया गया?

(क) 1966 में (ख) 1970 में
(ग) 1986 में (घ) 1990 में

उत्तर–(ग) 1986 में।

प्रश्न 15. प्रारंभिक कक्षाओं में विज्ञान अध्ययन के लिए जिस विधि को महत्व दिया है। वह है–

(क) निरीक्षण विधि (ख) सामूहिक विधि
(ग) करके सीखना (घ) वाद-विवाद

उत्तर–(ग) करके सीखना।

प्रश्न 16. आपकी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाषाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 4

प्रश्न 17. पर्यावरण अध्ययन के लिए विषय-वस्तु के चयन के लिए किन मुख्य बातों पर विचार किया जाता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-39, प्रश्न 1

प्रश्न 18. सामाजिक अध्ययन के शिक्षण से संबंधित मूल्यों के नाम बताएं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-104, प्रश्न 5

प्रश्न 19. मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-64, प्रश्न 3

प्रश्न 20. पठन त्रुटियों से संबंधित कारणों के सामने सही या गलत लिखिए–

(1) नेत्र संचलन के उचित प्रशिक्षण का अभाव
(2) मातृभाषा का हस्तक्षेप
(3) अपरिचित और अज्ञात शब्द
(4) जटिल वाक्य संरचना
(5) रुचि का अभाव
(6) पर्याप्त अभ्यास का अभाव

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-22, प्रश्न 1

प्रश्न 21. विज्ञान में अनुदेश के लिये प्रयोगशाला कार्यकलाप के कम से कम दो मूल उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-81, प्रश्न 2

प्रश्न 22. शुद्ध गणित और व्यावहारिक गणित का अन्तर दर्शाने के लिए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-50, प्रश्न 2

प्रश्न 23. आप अनुवीक्षण द्वारा औसत नीचे, औसत और औसत ऊपर में विद्यार्थियों को कैसे पहचानेंगे? ऐसा करने से छात्र प्रगति में किस प्रकार मदद मिलेगी?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-86, प्रश्न 5

प्रश्न 24. निम्नलिखित के लिए उदाहरणस्वरूप एक-एक वाक्य लिखिए–

(1) सामान्य कथन
(2) विस्मय कथन
(3) प्रश्न कथन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-9, प्रश्न 1

प्रश्न 25. गणित प्रयोगशाला के महत्त्व और आवश्यकता बताएँ।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-58, प्रश्न 5

प्रश्न 26. सामाजिक अध्ययन को प्राथमिक विद्यालय स्तर पर क्यों पढ़ाया जाना चाहिए?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-91, प्रश्न 1

प्रश्न 27. पर्यावरण अध्ययन के शैक्षणिक उद्देश्यों के संबंध में शिक्षाविदों के विचार बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-34, प्रश्न 2

प्रश्न 28. विज्ञान किसे कहते हैं? इसका शिक्षण क्यों आवश्यक है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-71, प्रश्न 4

प्रश्न 29. चॉक बोर्ड के चार प्रयोगों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, प्रश्न 7

प्रश्न 30. अनुदेश/शिक्षण-प्रक्रम किसे कहते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-104, प्रश्न 2

प्रश्न 31. गणित सीखने के चरणों के नाम बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-54, प्रश्न 2

प्रश्न 32. समस्या समाधान उपागम के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-77, प्रश्न 2

प्रश्न 33. वाक्-प्रशिक्षण क्यों महत्त्वपूर्ण है? कारण बतलाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, प्रश्न 4

प्रश्न 34. अपने स्थानीय पर्यावरण से सम्बन्धित किसी क्रियाकलाप के लिए योजना बनाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-40, प्रश्न 3

प्रश्न 35. आपने विज्ञान शिक्षक बनने का निर्णय क्यों लिया है? इसके उद्देश्यों और लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए विज्ञान की शिक्षा आप क्यों प्राप्त करना चाहते हैं? उसके कारण बताएं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-73, प्रश्न 2

प्रश्न 36. वाद-विवाद और नामिका परिचर्चा के शैक्षणिक मूल्य क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-97, प्रश्न 4

प्रश्न 37. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में खेल कूद की उपयोगिता की संक्षेप में विवेचना कीजिये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-18, प्रश्न 2

प्रश्न 38. ऐसी पाठ योजना तैयार करें जिसमें छात्र कई जिज्ञासा प्रक्रमों का उपयोग करते हों।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-106, प्रश्न 5

प्रश्न 39. गणित में प्रश्न बैंक तैयार करते समय किन बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-67, प्रश्न 3

प्रश्न 40. पर्यावरण अध्ययन के तीन घटक कौन-से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-44, प्रश्न 1

प्रश्न 41. विज्ञान में विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन निदानात्मक परीक्षण द्वारा आप किस प्रकार अनुवीक्षण करेंगे?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-87, प्रश्न 2

प्रश्न 42. प्रारम्भिक कक्षाओं में लिखना सिखाने की प्रक्रिया को स्पष्ट करो।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-12, प्रश्न 5

■■

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

विद्यालयी विषयों का शिक्षण-शास्त्र
(Pedagogy of School Subjects)

भाषाओं का शिक्षण-शास्त्र
(Pedagogy of Languages)

भाषा एवं संप्रेषण, शैशवावस्था एवं बचपन के दौरान उनका विकास और भाषा कौशल
(Language and Communication, Language Skills and their Development during Infancy and Childhood)

1

अध्याय का विहंगावलोकन

भाषा एवं संप्रेषण

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण बालक के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि अनौपचारिक शिक्षण घर से ही आरंभ हो जाता है, लेकिन औपचारिक शिक्षण विद्यालय में आरंभ होता है। यह शिक्षण न केवल अन्य विषयों के अधिगम में मदद करता है, बल्कि आत्माभिव्यक्ति में भी बालक की सहायता करता है। शिक्षण संबंधी अन्य विषयों के सीखने, विद्यालय परिसर से बाहर परस्पर संवाद स्थापित करने, दैनिक कार्यकलापों में तथा अन्य क्षेत्रों की बातों को सीखने में भी सहायता करता है।

सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना ये भाषा के चार आधारभूत कौशल हैं, जिनका विकास एक प्रबुद्ध शिक्षक लगन और निष्ठा के साथ बालक में करता है।

विद्यालयी शिक्षण में पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत न सिर्फ पढ़ाए जाने वाले विविध विषय सम्मिलित हैं, बल्कि इसमें विद्यार्थी के अधिगम में तीव्रता एवं अधिकता के लिए विद्यालय व्यवस्था द्वारा किए गए अन्य कार्यकलाप भी सम्मिलित हैं। चूँकि भाषायी परिपक्वता अन्य विषयों के अधिगम में भी सहायता प्रदान करती है, अत: प्राथमिक स्तर के भाषा शिक्षण पर अपेक्षाकृत अधिक समय व ध्यान देना आवश्यक हो जाता है।

भाषा शिक्षण संबंधी मूल रचनात्मकता का बीजारोपण प्राथमिक स्तर पर हो जाता है तथा इसी समय वह कक्षा के वातावरण में भाषा को नियोजित एवं व्यवस्थित रूप से सीखता है। इससे बालक को अन्य विषयों के ज्ञान तथा अपने अनुभवों को व्यवस्थित एवं संचित करने में सहायता मिलती है। अत: शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह स्पष्ट उच्चारण और मुखर स्वर तथा अपनी साफ-साफ लिखावट का प्रयोग करते हुए मनोरंजक वातावरण में बालक को भाषा के व्यावहारिक प्रयोग से भलीभाँति अवगत कराए।

भाषा शिक्षण के संबंध में एक बात उल्लेखनीय है कि किसी भी कौशल विकास के दौरान उन्हीं संदर्भों या युक्तियों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो बालक के परिवेश से जुड़ी हों अर्थात् बालक उससे भलीभाँति परिचित हो। इस तकनीक के द्वारा न केवल प्रभावशाली शिक्षण दिया जा सकता है, बल्कि अधिक मात्र में बालकों की स्वैच्छिक सहभागिता सुनिश्चित करते हुए अधिगम के लिए उन्हें उत्साहित भी किया जा सकता है।

संप्रेषण मुख्य रूप से भाषा, भाव-भंगिमाओं, शाब्दिक एवं अशाब्दिक प्रतीकों के द्वारा घटित होता है। प्रभावी संप्रेषण के लिए निर्धारित किए गए प्रतीकों, चिह्नों और अर्थों का ज्ञान होना आवश्यक है। संप्रेषण के द्वारा शिक्षक छात्र के व्यवहार से निष्कर्ष निकालता है कि अन्य व्यक्ति कौन से विचार को संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा है? यदि प्रेषक और प्रापक संदेश का एक ही प्रकार से अर्थ निकालते हैं, तो संप्रेषण का प्रयोजन सिद्ध हो जाता है। संप्रेषण व्यक्तियों के बोध और संप्रेषण कौशलों पर निर्भर करता है।

शैशवावस्था एवं बाल्यकाल के दौरान भाषा-कौशलों का विकास

जन्म से ही बालक अपनी इन्द्रियों की सहायता से वस्तुओं का अनुभव करना सीखता है। प्रारम्भ में उसकी प्रतिक्रिया केवल मूर्त वस्तुओं के प्रति होती है, परन्तु विकास के साथ-साथ उसकी भाषा सम्बन्धी कुशलता भी बढ़ती जाती है। इसके पश्चात वह सिद्धांतों एवं अमूर्त वस्तुओं का भी ज्ञाता बन जाता है। जैसे-जैसे बालक की अन्त:क्रिया का क्षेत्र विस्तृत होता जाता है, वैसे-वैसे बालक के शब्दकोश में भी वृद्धि होती जाती है। भाषा-विकास के कारण बालक विभिन्न मूर्त तथा अमूर्त पक्षों को समझने में सक्षम हो जाता है। विद्यालय में प्रवेश करने के पश्चात बालक के शब्दकोश का क्षेत्र विशाल एवं विस्तृत हो जाता है। यही कारण है कि बालक को जब विभिन्न पहलुओं; जैसे-मातृभूमि, ईमानदारी, बलिदान, संस्कृति या सभ्यता के बारे में विस्तृत विवेचन करने के लिए कहा जाता है, तो बालक अपने शब्दकोश की सहायता से ही उसका कुशल वर्णन करने में सक्षम हो पाता है। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्दकोश का भी बालक कुशलता से वर्णन एवं विवेचन कर सकता है।

www.neerajbooks.com

बालक एक कोरी स्लेट की भांति होता है। प्राथमिक तथा आरंभिक शिक्षा प्राप्त करते समय बालक साधारण शब्दों एवं ज्ञान से अपरिचित होता है, प्रारंभिक शिक्षा काल में बालक साधारण शब्दकोश से अनभिज्ञ होता है परन्तु 3-5 वर्ष का बालक विभिन्न सामाजिक समूहों से अंतर्क्रिया करके अपनी भाषा क्षमता का विकास कर लेता है। इस अध्ययनशाला में बालक 13000-22000 घंटे व्यतीत करता है, जिसमें उसकी अन्तर्क्रिया विभिन्न संवादाताओं, जिनका प्रसारण टी.वी तथा रोडियो द्वारा किया जाता है, से भी अप्रत्यक्ष रूप से होती है। इसके अतिरिक्त बालक के शब्दकोश का विकास अधिक तीव्रगति से होता है, यदि बालक के परिवार के सदस्य उसे पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके परिणामस्वरूप बालक कई काल्पनिक कहानियों एवं कलाकृतियों को प्रस्तुत करने तथा उनकी विवेचना करने में सफल हो जाता है। इस प्रकार विभिन्न सामाजिक समूहों से उसकी अंतर्क्रिया बालक के शब्द-ज्ञान में वृद्धि एवं विस्तार कर देती है। इस प्रकार बालक के शब्द ज्ञान तथा भाषा का विकास उसके ज्ञान तथा विचार करने की क्षमता को भी विस्तृत एवं विशाल स्वरूप प्रदान करता है।

शिक्षा के प्रारंभिक काल में बालक के भाषा-कौशल के विकास पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यद्यपि साधारण शब्दकोश से सम्बधित कई शब्दों से बच्चा अपनी माँ से ही ज्ञान प्राप्त कर लेता है। बच्चे भाषा-शैली से संबंधित साधारण पक्ष अपने सहयोगी समूह, मित्र मंडली तथा आस-पास के व्यक्तियों से अंतर्क्रिया करके भी सीख लेते हैं।

बच्चे के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास विद्यालय के लिए जटिल एवं परीक्षापूर्ण पहलू है। विद्यालय में प्रवेश करके ही बालक विभिन्न समूहों एवं सदस्यों से अंतर्क्रिया करना आरम्भ करता है। प्रत्येक बालक स्वयं के लिए खास है एवं कुछ भिन्न योग्यताओं को लेकर विद्यालय आता है। विद्यालय का दायित्व उन योग्यताओं एवं क्षमताओं को पूर्ण विकसित करने के लिए सहयोगी एवं सकारात्मक आधार प्रदान करना है। यद्यपि बालक को सक्रिय तथा वास्तविक पक्षों का अध्ययन विद्यालय में नहीं कराया जाता। उन्हें भाषण विधि या व्याख्यान विधि के माध्यम से ही ज्ञान दिया जाता है। बालक का विकास बिना किसी बोझ एवं सकारात्मक रूप से तभी संभव है, जब अध्यापक छात्रों को वास्तविक तथ्यों एवं पक्षों से अवगत कराएं। मानव का स्वभाव है कि वह सदैव कौशल एवं क्षमता के विकास लिए प्रयास नहीं करता है। अध्यापक भी बालक की क्षमताओं या विचारों को महत्त्व नहीं देते, अपितु वे केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि बालक को भविष्य में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कक्षा में प्रवेश करते ही अध्यापक बालकों पर अपनी क्षमता एवं विचारों को थोपना आरम्भ करता है। यद्यपि सभी बालकों की सीखने की क्षमता समान नहीं होती। इस प्रकार हमारे विद्यालय की कक्षाओं में एकतरफा ज्ञान दिया जाता है, जिसमें केवल अध्यापक की ही सक्रिय भूमिका होती है। शिक्षाशास्त्री हमेशा यह सुझाव देते हैं कि अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक-छात्र दोनों पक्षों का सक्रिय होना अति आवश्यक है। कक्षा अधिगम प्रक्रिया में बालकों की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए तथा बालकों को उचित वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि बालकों का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। बालक को यदि अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता दी जाए तो अवश्य ही बालक कम समय में कई पक्षों व मूल्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेगा। परन्तु खेद इस बात का है कि हमारी शिक्षा पद्धति आज भी व्यवहार से अधिक पुस्तकीय ज्ञान को महत्त्व देती है। यही कारण है कि बालक के ज्ञान का क्षेत्र पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रहता है।

हमारे देश में मातृभाषा से अधिक महत्त्व राष्ट्र या राज्य की भाषा को दिया जाता है। इसी कारण बालक के लिए भाषा क्षेत्र में कई समस्याएँ पैदा हो जाती हैं, क्योंकि उसके जन्म एवं ज्ञान प्रदान करने वाली संस्थाएं दो भिन्न-भिन्न भाषाओं का अध्ययन कराती हैं। परिणामस्वरूप बालक जन्म से वयस्क होने तक भाषा में पूर्ण क्षमता प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि भाषा बालकों को अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को व्यक्त करने में सहायता प्रदान करती है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. यदि आप नीचे दिए गए कथन से सहमत हैं, तो सहमत लिखकर और यदि असहमत हैं तो असहमत लिखकर उत्तर दें–

(1) बालक विद्यालय में प्रवेश से पहले भाषा नहीं सीखता है।
(2) शिक्षार्थी विद्यालय में सुनियोजित भाषा सीखता है।
(3) कक्षा में प्रस्तुत अधिगम अनुभव नियोजित नहीं होते।
(4) बालक घर में भाषा को व्यवस्थित रूप से सीखना प्रारम्भ करता है।
(5) भाषा शिक्षण के समय शिक्षक को यह अपेक्षा करनी चाहिए कि बच्चे सुनकर समझ सकें।
(6) शिक्षार्थी भाषा सीखने के बाद उसे प्रभावी रूप से बोल सकते हैं।
(7) भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य आधारभूत कौशलों का विकास करना है।
(8) भाषा कौशल अंतर्संबंधित नहीं होते हैं।

उत्तर–(1) असहमत, (2) सहमत, (3) असहमत, (4) असहमत, (5) सहमत, (6) असहमत, (7) सहमत, (8) असहमत।

पश्न 2. निम्नलिखित युक्तियों द्वारा किन-किन भाषा कौशलों का विकास किया जा सकता है?

(1) कहानी कथन
(2) नाटक
(3) प्रश्नोत्तर
(4) शब्द-निर्माण खेल
(5) पहेलियाँ
(6) निबंध-लेखन
(7) पत्र-लेखन
(8) घटनाओं का वर्णन।

उत्तर–उपर्युक्त युक्तियों द्वारा निम्नलिखित भाषा कौशलों का विकास किया जा सकता है–

(1) कहानी कथन : सुनना, बोलना, लिखना।
(2) नाटक : सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना।
(3) प्रश्नोत्तर : सुनना, बोलना, लिखना।
(4) शब्द-निर्माण खेल : सुनना, बोलना।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(5) पहेलियाँ : बोलना।
(6) निबंध-लेखन : लिखना।
(7) पत्र-लेखन : लिखना।
(8) घटनाओं का वर्णन : सुनना, बोलना, लिखना।

प्रश्न 3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) भारत में .... ने त्रिभाषा-सूत्र को अपनाया। *(राज्य सरकार, केन्द्र सरकार, जनता)*

(2) भारत .... भाषाओं का देश है। *(14, 18, 22)*

नोट–संविधान (92वाँ संशोधन) अधिनियम, 2003 : संविधान की आठवीं अनुसूची में बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली भाषाएं जोड़ी गई हैं। अत: भाषाओं की कुल संख्या अब 22 हो गई है।

(3) शिक्षार्थी को विद्यालय में .... भाषाएं सीखनी चाहिए। *(दो, तीन, चार)*

(4) .... भाषा किसी क्षेत्र विशेष में बोली एवं प्रयोग की जाती है। *(प्रथम, द्वितीय, तृतीय)*

(5) सरकार ने निर्णय लिया कि प्राथमिक स्तर पर .... भाषा शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए। *(प्रथम, द्वितीय, तृतीय)*

(6) भारत में सामान्यत: हिन्दी अथवा अंग्रेजी .... हैं। *(भा$_1$, भा$_2$, भा$_3$)*

(7) .... स्वाभाविक रूप से सीखी जाती है। *(भा$_1$, भा$_2$, भा$_3$)*

(8) .... भाषा सचेतन रूप से सीखी जाती है। *(प्रथम, द्वितीय, तृतीय)*

उत्तर–(1) केन्द्र सरकार, (2) 22, (3) तीन, (4) प्रथम, (5) प्रथम (प्रथम भाषा से तात्पर्य बालक की मातृभाषा से है), (6) भा$_2$ (त्रिभाषा सूत्र के परिप्रेक्ष्य में द्वितीय भाषा को कहते हैं), (7) भा$_1$ (शिक्षार्थी की मातृभाषा), (8) द्वितीय/तृतीय

पश्न 4. आपकी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाषाएं कौन-सी हैं?

उत्तर–मेरी प्रथम भाषा हिन्दी, द्वितीय भाषा अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा संस्कृत हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. किसी भी अन्य भाषा से पहले बालक को मातृभाषा क्यों सिखाई जाती है?

उत्तर–माता बच्चे के साथ जिस भाषा में बातचीत करती है और बालक अपनी माता तथा परिवार के अन्य व्यक्तियों का अनुसरण कर जिस भाषा को सीखता है, उसे ही प्राय: मातृभाषा कहा जाता है। परिभाषा से स्पष्ट है कि बालक स्वाभाविक रूप से ही मातृभाषा को सीख जाता है। चूँकि बालक पहले से ही इस भाषा से परिचित होता है, अत: उसे उस भाषा के माध्यम से अन्य विषयों के अधिगम में अपेक्षाकृत अधिक सुविधा होती है। वह अपनी बातों को स्वाभाविक व सहज रूप से प्रस्तुत कर सकता है तथा किसी दूसरे व्यक्ति के विचारों को उतनी ही सहजता के साथ ग्रहण भी कर सकता है। अत: बालक में शिक्षा के प्रति स्वप्रेरित रुचि पैदा करने, उनके स्वाभाविक गुणों को मुखर करने, उनकी अधिगम दर को तीव्र करने अर्थात उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर अन्य भाषा में शिक्षा देने के पहले मातृभाषा का शिक्षण अत्यावश्यक है।

प्रश्न 2. भाषा शिक्षण करते समय एक शिक्षक का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

उत्तर–भाषा शिक्षण करते समय शिक्षक का उद्देश्य होना चाहिए कि उसके शिक्षार्थी–

(1) सुनकर समझ सकें।
(2) औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में प्रभावी रूप से बोल सकें।
(3) पढ़कर समझ सकें एवं विभिन्न प्रकार की पठन-सामग्री का आनन्द ले सकें।
(4) तार्किक क्रम एवं सृजनात्मक रूप से साफ-साफ लिख सकें और
(5) विभिन्न संदर्भों में व्याकरण का व्यावहारिक प्रयोग कर सकें।

निष्कर्षत: भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है–बेहतर समझ एवं प्रभावी सम्प्रेषण के लिए सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों का विकास।

प्रश्न 3. प्रारंभिक वर्षों में बालक को किस प्रकार का ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए?

उत्तर–प्रारंभिक वर्षों में भाषा का ज्ञान बालक परिवार या अध्यापकों की भाषा-शैली का अनुकरण करके प्राप्त करता है। शिक्षण वार्तालाप एवं विचारों को आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया है। शिक्षक अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है, यही कारण है कि विशेषज्ञों द्वारा विचार-विमर्श की प्रक्रिया को ज्ञान का आधार माना जाता है। अध्यापक छात्रों से विचार-विमर्श करते समय कई नवीन शब्दों से उन्हें अवगत करवा सकता है। बालक की विश्व सम्बन्धी विचार शक्ति का भी विकास कर सकता है। बालक की चिंतन शक्ति उसके शब्दकोश पर निर्भर करती है। प्रारंभिक वर्षों में छात्रों को शिक्षा पद्धति से अधिक अध्ययन कराया जाता है, ताकि बालक की शब्दों को उच्चारण करने की क्षमता बढ़ जाए। बालक के भाषा कौशल का विकास करने के लिए उन्हें विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए, विशेषकर छात्र-छात्र अंतर्क्रिया। अध्यापक-छात्र अंतर्क्रिया एवं सामूहिक क्रियाकलाप इस प्रक्रम में अधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि 5 वर्ष के बालक को मां से संबंधित वाक्यांश बोलने के लिए कहा जाए, तो बालक अवश्य सक्रिय हो जाएगा। इस प्रकार प्रारंभिक वर्षों में भाषा सम्बन्धी ज्ञान साधारण पक्षों से आरम्भ किया जाना चाहिए। बच्चे आपस में जितना विचारों का आदान-प्रदान करेंगे, उनकी भाषा क्षमता का उतना विकास होगा, क्योंकि बालक कई बार जो ज्ञान अध्यापक से प्राप्त नहीं कर पाते, वे सहयोगी छात्रों से उसे आसानी से सीख लेते हैं।

प्रश्न 4. प्रारंभिक शिक्षा प्रक्रम में बालकों को किस भाषा द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए?

उत्तर–प्रारंभिक शिक्षा काल में बच्चों को उनकी मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए। भारत में काफी समय से राष्ट्र एवं राज्य भाषा को महत्त्व दिया जाता रहा है, परन्तु उसका परिणाम नकारात्मक

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

ही आया है, क्योंकि एक बालक के लिए नवीन भाषा का अध्ययन करना कोई सरल कार्य नहीं है। बालक की भाषा यदि उसके अधिगम प्रक्रम से भिन्न होगी, तो उसकी भाषा दक्षता अवश्य अशुद्ध एवं अस्पष्ट होगी। बालक के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति यह है कि हम उसे उस विश्व की भाषा-क्षमता का अध्ययन करा रहे हैं जिसका विशाल क्षेत्र बालक की चिंतन शक्ति से परे है। बालक दो पक्षों में असंतुलन एवं कठिनाई अनुभव करता है; जैसे हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का अध्ययन बालक के लिए जटिलता एवं कठिनाई पैदा कराता है। इसके अतिरिक्त उसकी मातृभाषा उसे भाषा दक्षता के तीनों कोणों या क्षेत्रों में बांट देती है। परिणामस्वरूप बालक किसी भी भाषा का पूर्ण एवं स्पष्ट वक्ता नहीं बन पाता। यही कारण है कि भारत सरकार द्वारा अब प्रारंभिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही देने का प्रावधान किया गया है, परन्तु यह एक जटिल प्रक्रिया है।

प्रश्न 5. तीन भिन्न-भिन्न भाषाओं के बालकों का चुनाव कीजिए। उन्हें अंग्रेजी का एक अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहिए। बालकों द्वारा उच्चारण की भिन्न-भिन्न क्षमताओं की पहचान कीजिए।

उत्तर–हमने इस परीक्षा के लिए तीन से अधिक छात्रों का चुनाव किया। बालक पंजाबी, हिन्दी, बांगला तथा मराठी भाषी थे। बच्चों को एक ही अध्याय का भाग पढ़ने के लिए कहा गया। इस परीक्षण के पश्चात हमने अनुभव किया कि भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के बालकों ने भिन्न-भिन्न उच्चारण किया, परन्तु उनकी मातृभाषा का प्रभाव उनके भाषा-कौशल में अवश्य प्रतीत हुआ, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालकों पर मातृभाषा का प्रभाव राष्ट्र या देश की कार्यकारी भाषा से अधिक होता है।

प्रश्न 6. विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों से बच्चों का चुनाव कीजिए। उन्हें एक ही विषय पर अपने विचार लिखित रूप में देने के लिए कुछ समय प्रदान करें। बच्चों द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों एवं भाषा-शैली का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–हमने विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों से बालकों का चुनाव किया। उन्हें 'भारत की जलवायु' विषय पर विचार लिखने के लिए कहा। बच्चों की आयु 6-10 वर्ष के भीतर ही थी। इस परीक्षण में राम जो 7 वर्षीय बालक है, की भाषा दक्षता 10 वर्षीय छात्र दीपक से कम थी। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न छात्रों के भाषा कौशल का अध्ययन करके हमने यह अनुभव किया कि बालकों की भाषा-शैली उनकी आयु, शैक्षिक प्रक्रम एवं पारिवारिक भाषा दक्षता सभी से प्रभावित थी। जिन परिवारों के अभिभावक भाषा-दक्षता में सक्षम होते हैं, उनकी संतानों की भाषा क्षमता एवं कुशलता भी अधिक होती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि बालक की भाषा क्षमता एवं चिंतन प्रक्रिया उसके विद्यालय, परिवार तथा क्षेत्र विशेष से अधिक प्रभावित होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विद्यालयों में 'भाषा' की शिक्षा क्यों आवश्यक है? विवेचना करें।

उत्तर–भाषा व्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास करने में सक्षम है। जीवन में भाषा का महत्त्व सर्वाधिक है, जिसके बिना मनुष्य एक सभ्य, शिष्ट, परिमार्जित, उच्च, आदर्श कोटि का जीवनयापन नहीं कर सकता। विद्यालयी शिक्षा का सर्वोत्तम साधन भाषा है। भाषा विचार-विनिमय का साधन है तथा भाषा ज्ञान का संरक्षण करती है। भाषा ज्ञान का संग्रह करती है और उसे सुरक्षित कर नई पीढ़ी को सौंपती है। आज के छात्र भाषा में दक्षता प्राप्त करने पर ही ज्ञान के अक्षय भण्डार (उत्कृष्ट कोटि के साहित्य) से लाभान्वित हो सकेंगे, इसलिए जीवन में अत्यधिक महत्त्व के कारण भाषा को मानवीय विकास का पर्याय मान लिया गया है। भाषा के सार्वभौम महत्त्व को सभी देशों और सभी कालों में स्वीकार किया गया है। भाषा सभ्यता और संस्कृति की जननी है, जो विश्वबन्धुता का मार्ग प्रशस्त करने के साथ सामाजिक और राष्ट्रीय एकता की द्योतक है। यह सर्वविदित है कि व्यक्ति का विकास भाषा के बिना असम्भव है, अत: विद्यालयों में भाषा का समुचित ज्ञान दिया जाना अनिवार्य है। मातृभाषा को सभी भाषाओं में शिक्षाशास्त्रियों द्वारा सर्वसम्मति से 'सर्वश्रेष्ठ' माना गया है। नि:सन्देह मातृभाषा व्यक्ति की सहज अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ साधन है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार, "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए 'मातृभाषा' इतनी ही आवश्यक है, जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।"

विद्यालयों में अध्यापक का प्रमुख दायित्व छात्रों को भाषायी कौशलों की पूर्णता तक पहुँचाना है। छात्रों के विभिन्न विषयों के ज्ञान व कौशल में वृद्धि के साथ शब्द-भण्डारों में अपेक्षित वृद्धि के साथ 'सुनना' और 'बोलना' के साथ ही लेखन-कला के विकास पर आरम्भ से ही विशेष ध्यान दिया जाना श्रेयस्कर है। बोलते समय, शब्दोच्चारण की शुद्धि 'बलाघात', अनुतान, सस्वर वाचन, मौन वाचन, वाणी द्वारा अभिव्यक्ति तथा साथ ही ध्वनि-श्रवण, शुद्ध वर्तनी (अक्षर-विन्यास), सुलिपि (सुलेख), (श्रुत लिपि) श्रुतलेख, जिज्ञासा अनुभवों का लेखन आदि कौशलों के विकास का श्रेय भाषा को ही दिया जाता है, जिसके माध्यम से छात्र साहित्य के व्यवस्थित रूप से ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता विकसित करता है, अपनी जिज्ञासा, विचारों, भावों, चिन्तन शक्ति आदि को नई दिशा देता है।

व्यक्ति सभी वस्तुओं का स्वयं अनुभव नहीं कर सकता। साहित्य में संजोए हुए ज्ञान और अनुभवों का लाभ हम भाषा द्वारा उठा सकते हैं और सुन्दर भाषा के माध्यम से अपने-अपने सुसंस्कृत सुविचार दूसरों तक पहुँचाए जा सकते हैं। भाषा मानव की उदात्त भावनाओं को परिष्कृत करने के साथ उनका संवर्धन कर 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्' के मार्ग पर बढ़ने को प्रेरित करती है। हमें गर्व है कि समस्त सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी केवल 'मानव' में ही विचार और चिन्तन प्रक्रिया द्वारा 'भाषा' को सम्प्रेषित करने की क्षमता है, अत: प्रत्येक व्यक्ति को 'भाषा' सीखकर अपनी अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करना ही होगा, जो नितान्त आवश्यक है। इसी कारण विद्यालयों में भाषायी कौशलों की शिक्षा का विशेष महत्त्व है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा-ज्ञान ही सर्वप्रमुख है। शिष्ट भाषा के बिना मनुष्य के अस्तित्व का कोई औचित्य नहीं है।

अत: निष्कर्ष रूप में भाषा शिक्षा भाषायी कौशलों में निपुणता प्राप्त करने के साथ छात्रों के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए परम आवश्यक है।

प्रश्न 2. किसी भाषा के अध्ययन में उसके 'व्याकरण' का क्या महत्त्व है? संक्षेप में लिखें।

उत्तर–व्याकरण का भाषा अध्ययन में महत्त्व–

1. व्याकरण शिक्षा द्वारा भाषा का शुद्धतापूर्वक प्रयोग होता है। भाषा को शुद्ध बनाये रखने का काम व्याकरण का है। व्याकरण के द्वारा हम भाषा को 'व्यवस्थित' करते हैं।

www.neerajbooks.com